
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
12th GEOGRAPHY
ई-पाठशाला
नियोजन और
सतत पोषणीय विकास
ONE SHOT
पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...
29 सितंबर 2026 || 5:00 PM

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नियोजन



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

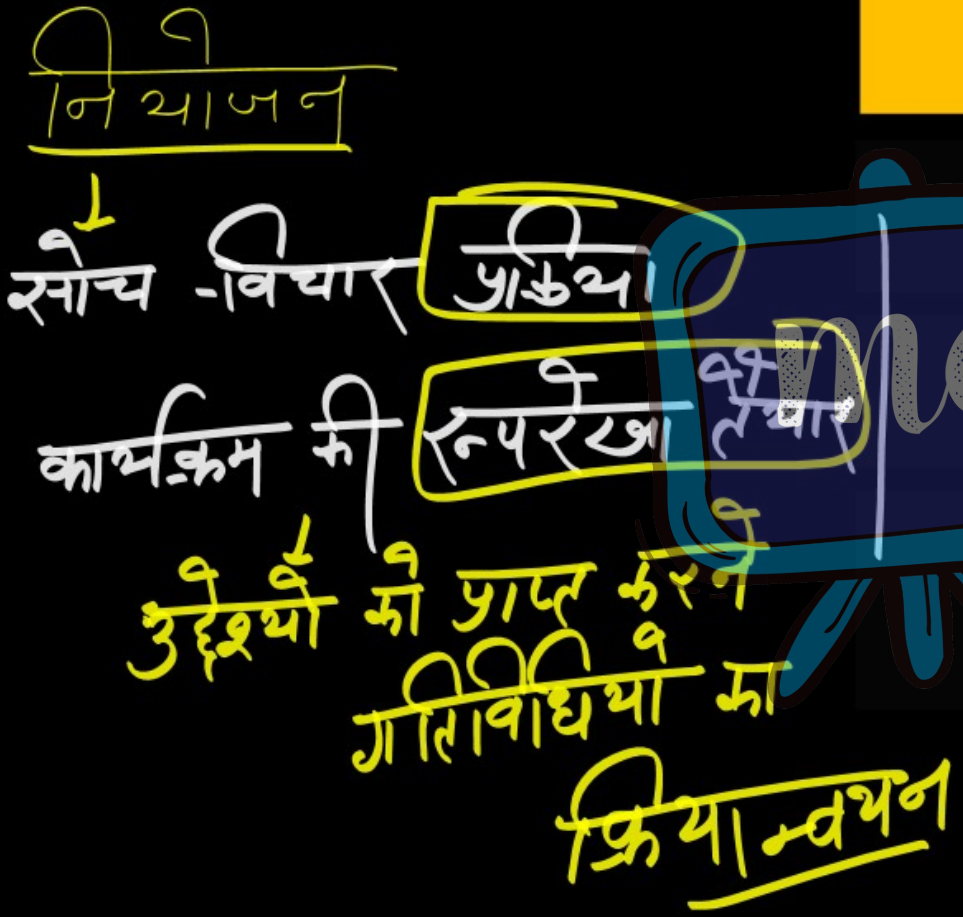
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

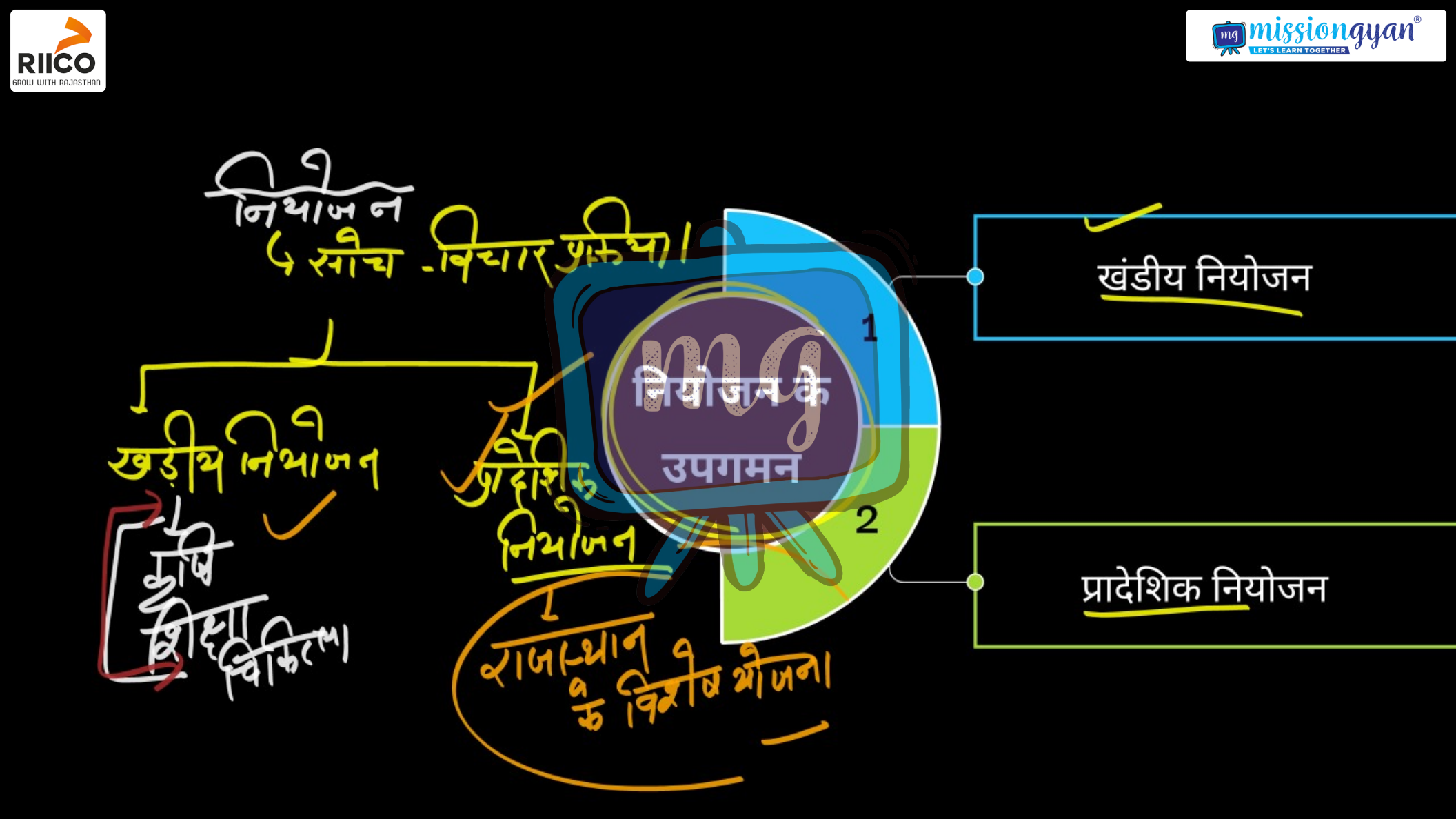
नियोजन

सोच-विचार की प्रक्रिया

कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना

उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु गतिविधियों का क्रियान्वयन



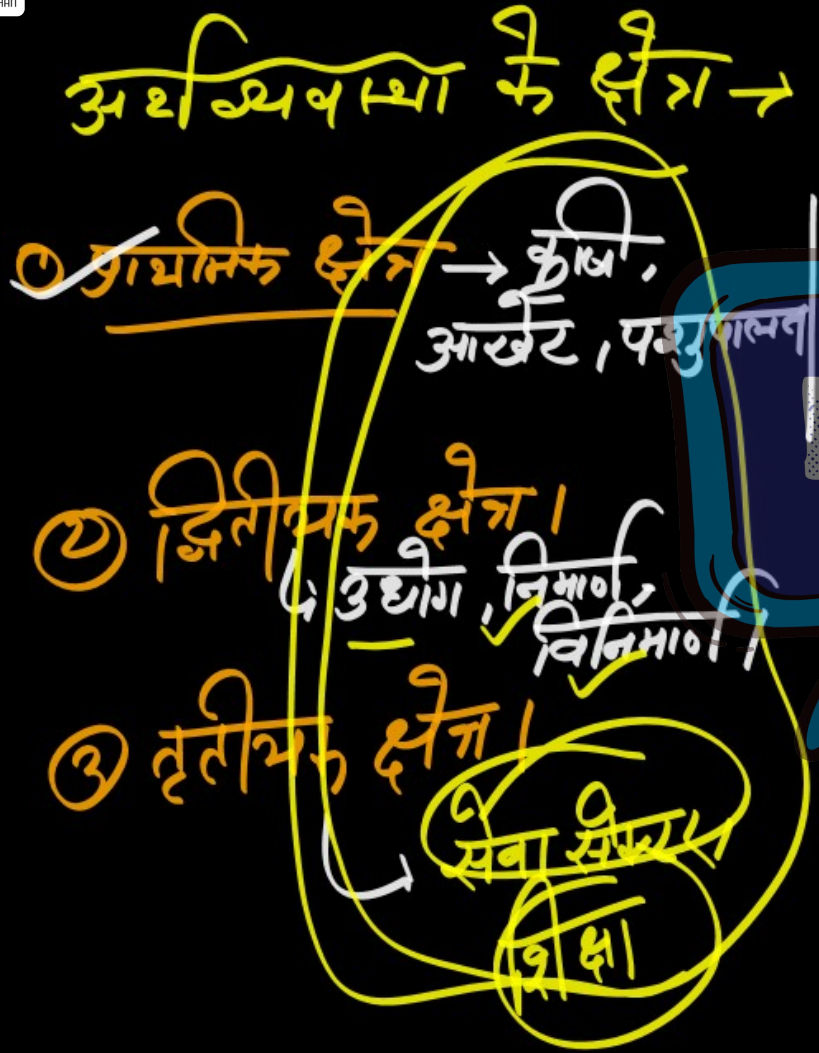

नियोजन
एक सोच - विचार प्रक्रिया।
खड़ीय नियोजन
कृषि
शिक्षा
चिकित्सा
प्रादेशिक नियोजन
राजस्थान के विशेष योजना।
mg
नियोजन के
उपगमन
1
2
खंडीय नियोजन
प्रादेशिक नियोजन

1. खंडीय नियोजन



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

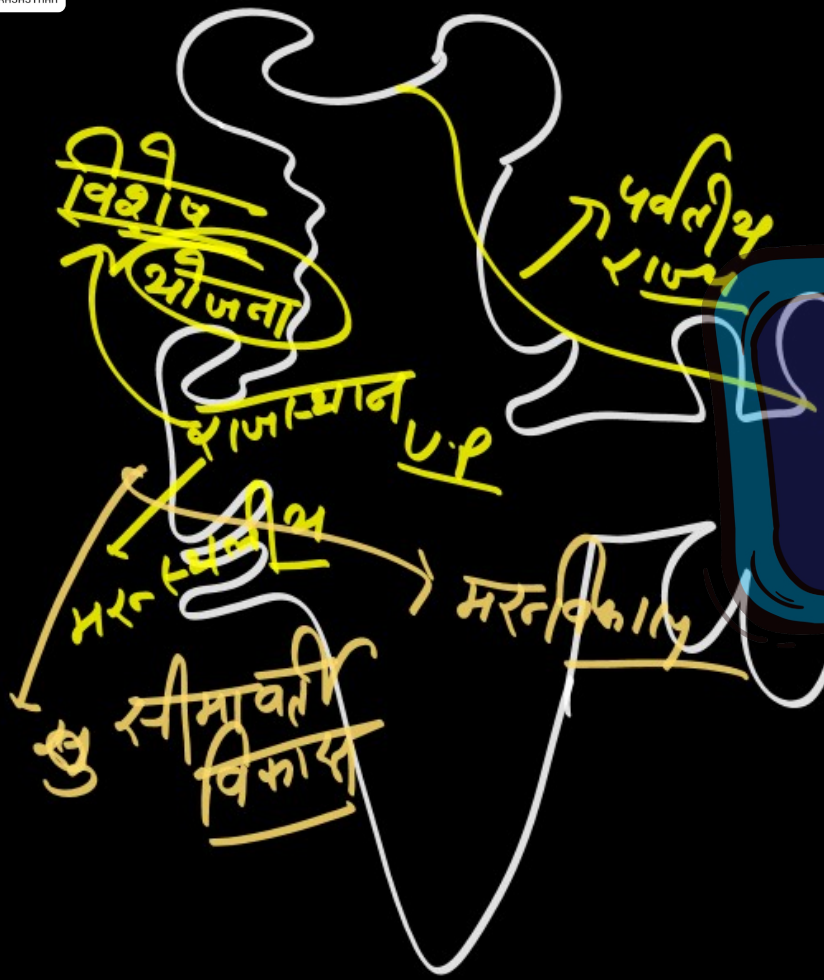


1. खंडीय नियोजन

अर्थव्यवस्था के विभिन्न सेक्टरों, जैसे- कृषि, सिंचाई, विनिर्माण, ऊर्जा, निर्माण, परिवहन, संचार, सामाजिक अवसंरचना और सेवाओं के विकास के लिए कार्यक्रम बनाना तथा उनको लागू करना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



2. प्रादेशिक नियोजन

नियोजक द्वारा एक स्थानिक परिप्रेक्ष्य अपनाना तथा विकास में प्रादेशिक असंतुलन कम करने के लिए योजना बनाना।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नियोजन

क्षेत्रीय नियोजन

प्रादेशिक नियोजन

नोट

- किसी भी देश में सभी क्षेत्रों में एक समान आर्थिक विकास नहीं हुआ है।
- कुछ क्षेत्र बहुत अधिक विकसित हैं तो कुछ पिछड़े हुए हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

योजना आयोग

केन्द्र / राज्य / जिला

→ स्थापना – 1950

→ कार्य → विकास योजना को तैयार

→ पदेन अध्यक्ष → प्रधानमंत्री (प्रथम → J. L. नेहरू)

योजना आयोग

केंद्र, राज्य तथा जिला स्तर पर योजनाओं को तैयार करने की ज़िम्मेदारी



नीति आयोग

→ योजना आयोग के स्थान

नीति आयोग

1 Jan 2015



सत्यमेव जयते

नीति आयोग

नीति आयोग

- जनवरी 1, 2015 को योजना आयोग का स्थान नीति आयोग ने ले लिया।
- उद्देश्य :

केंद्रीय तथा राज्य सरकारों को युक्तिगत तथा तकनीकी सलाह देना	भारत के आर्थिक नीति निर्माण में राज्यों की भागीदारी सुनिश्चित करना

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

केन्द्रीय योजना
↓
विकेन्द्रीकरण
||
राज्य स्तर
↓
जिला स्तर

भारत में योजनाएं

स्वतंत्रता के बाद भारत में केंद्रीकृत योजनाओं को अपनाया गया, लेकिन धीरे-धीरे विकेंद्रीकृत बहुस्तरीय योजनाओं की ओर कदम बढ़ाए गए।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लक्ष्य क्षेत्र नियोजन



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लक्ष्य क्षेत्र नियोजन

आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में नियोजन प्रक्रिया पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

किसी क्षेत्र का आर्थिक विकास उसके संसाधनों पर आधारित होता है।

कई बार संसाधनों से समृद्ध क्षेत्र भी पिछड़े रह जाते हैं।

आर्थिक विकास के लिए संसाधनों के साथ-साथ तकनीक एवं निवेश की भी आवश्यकता होती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

क्षेत्रीय असंतुलन

- लगभग डेढ़ दशक के नियोजन अनुभवों से यह महसूस किया गया कि आर्थिक विकास में क्षेत्रीय असंतुलन बढ़ रहा था।
- क्षेत्रीय एवं सामाजिक विषमताओं को नियंत्रित करने के लिए योजना आयोग ने दो उपागम प्रस्तुत किए-

लक्ष्य क्षेत्र योजना उपागम	लक्ष्य-समूह योजना उपागम

लक्ष्य क्षेत्र कार्यक्रमों के उदाहरण



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लक्ष्य क्षेत्र कार्यक्रमों के उदाहरण



- कमान नियंत्रित क्षेत्र विकास कार्यक्रम
- सूखाग्रस्त क्षेत्र विकास कार्यक्रम
- पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम

सम्बन्ध क्षेत्र

सूखाग्रस्त क्षेत्र

पर्वतीय क्षेत्र

लक्ष्य-समूह कार्यक्रमों के उदाहरण



किसान
- ① बृहद् किसान
- ② मध्यम
- ③ लघु किसान
- ④ सीमान्त किसान

लघु कृषक

लक्ष्य-समूह कार्यक्रमों के उदाहरण



सीमांत किसान विकास संस्था

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

(1) प्रथम → 1951-56

(2) द्वितीय → 56-61

(3) तृतीय → 1961-66 → 3 years

(4) चतुर्थ → 1969-74

(5) पंचम → 1974-78 → 2 years Rest

(6) छठवीं → 1980-85

(7) → 1985-90

(8) → 1992-97 → 2 years

(9) 97-2002

(10) 2002-2007

(11) 2007-12

(12) 2012-2017

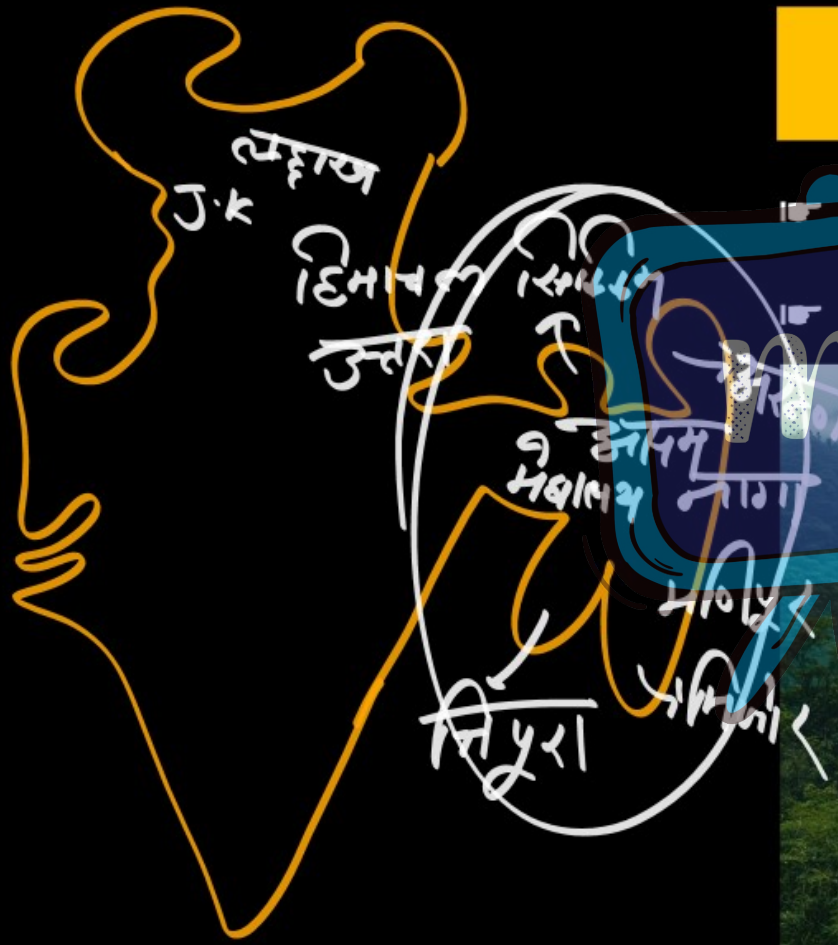
आठवीं पंचवर्षीय योजना

पर्वतीय क्षेत्रों, उत्तर-पूर्वी राज्यों, जनजातीय एवं पिछड़े क्षेत्रों में अवसंरचना के विकास हेतु विशिष्ट क्षेत्र योजना तैयार की गई।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम

- प्रारंभ : पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में
- कुल जिले : 15



पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम में शामिल क्षेत्र



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम में शामिल क्षेत्र

उत्तर प्रदेश : सारे पर्वतीय ज़िले (वर्तमान उत्तराखण्ड)

असम : मिकिर पहाड़ी और उत्तरी कछार की पहाड़ियाँ

पश्चिम बंगाल : दार्जिलिंग ज़िला

तमिलनाडु : नीलगिरी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

राष्ट्रीय समिति (1981)



1980-84
↳ भारत P.m
↳ इन्दिरा गाँधी

राष्ट्रीय समिति (1981)

पिछडे क्षेत्रों पर सिफारिश :

600 मीटर से अधिक ऊँचाई वाले सभी पर्वतीय क्षेत्रों को पिछड़े पर्वतीय क्षेत्रों मे शामिल किया जाए।

ऐसे क्षेत्रों में जनजातीय उप-योजना लागू नहीं होनी चाहिए।

पहाड़ी क्षेत्रों के विकास हेतु राष्ट्रीय समिति के सुझाव



पहाड़ी क्षेत्रों के विकास हेतु राष्ट्रीय समिति के सुझाव



विकास का लाभ सभी लोगों को मिले, केवल प्रभावशाली व्यक्तियों को नहीं।

स्थानीय संसाधनों एवं प्रतिभाओं का विकास किया जाए।

जीविका-निर्वाह अर्थव्यवस्था को निवेश-उन्मुखी बनाना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पहाड़ी क्षेत्रों के विकास हेतु राष्ट्रीय समिति के सुझाव



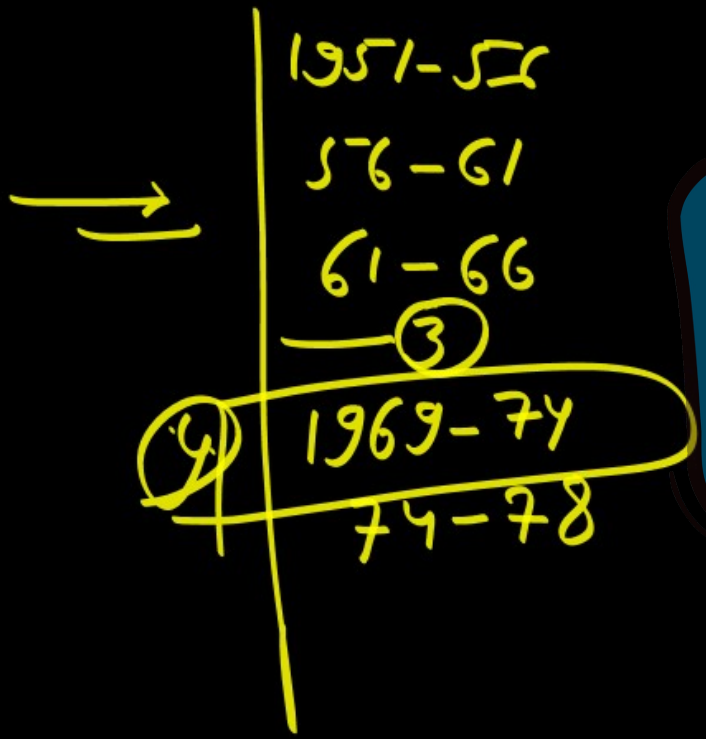
- अंतःप्रादेशिक व्यापार में पिछड़े क्षेत्रों का शोषण न हो।
- बाज़ार व्यवस्था में सुधार कर श्रमिकों को लाभ पहुँचाना।
- पारिस्थिकीय संतुलन बनाए रखना।

सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम

- शुरुआत : चौथी पंचवर्षीय योजना में
- उद्देश्य :
  - सूखा संभावी क्षेत्रों में लोगों को रोज़गार उपलब्ध करवाना
  - सूखे के प्रभाव को कम करने के लिए उत्पादन के साधनों को विकसित करना

पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में इसके कार्यक्षेत्र का विस्तार

प्रारंभ में ऐसे सिविल निर्माण कार्यों पर बल दिया गया जिनमें अधिक श्रमिकों की आवश्यकता हो



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में इसके कार्यक्षेत्र का विस्तार



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में इसके कार्यक्षेत्र का विस्तार

- सिंचाई परियोजनाएँ
- भूमि विकास कार्यक्रम
- वनीकरण
- चरागाह विकास
- आधारभूत ग्रामीण अवसंरचना

विद्युत | सड़कें | बाज़ार

ऋण सुविधाएँ | सेवाएँ

राष्ट्रीय समिति की समीक्षा



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

राष्ट्रीय समिति की समीक्षा

यह कार्यक्रम मुख्यतः कृषि तथा
इससे संबद्ध सेक्टरों के विकास तक ही सीमित

पर्यावरणीय संतुलन
पुनःस्थापन पर इसमें विशेष बल

जनसंख्या वृद्धि → कृषि के लिए सीमांत
भूमि का उपयोग व पारिस्थितिकीय निम्नीकरण

सूखा संभावी क्षेत्रों में वैकल्पिक
रोज़गार अवसर पैदा करने की आवश्यकता

विकास की रणनीतियाँ



विकास की रणनीतियाँ

- सूक्ष्म-स्तर पर समन्वित जल-संभर विकास कार्यक्रम अपनाना
- निम्नलिखित के बीच पारिस्थितिकीय संतुलन के पुनःस्थापन पर ध्यान देना—



- जल
- मिट्टी
- पौधे
- मानव जनसंख्या
- पशु जनसंख्या

सूखा संभावी क्षेत्रों की पहचान



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सूखा संभावी क्षेत्रों की पहचान

1967

योजना आयोग द्वारा 67 जिलों (पूर्ण या आंशिक) की पहचान सूखा संभावी जिलों के रूप में

1972

सिंचाई आयोग द्वारा 30% सिंचित क्षेत्र के मापदंड के आधार पर सूखा संभावी क्षेत्रों का परिसीमन

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भारत के प्रमुख सूखा संभावी क्षेत्र



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारत के सूखा सम्भाव्य क्षेत्र



भारत के प्रमुख सूखा संभावी क्षेत्र

- राजस्थान
- गुजरात
- पश्चिमी मध्य प्रदेश
- महाराष्ट्र : मराठवाड़ा क्षेत्र
- आंध्र प्रदेश : रायलसीमा
- तेलंगाना पठार
- कर्नाटक पठार
- तमिलनाडु : उच्च भूमि

सूखे से अपेक्षाकृत सुरक्षित क्षेत्र



पंजाब

हरियाणा

उत्तरी राजस्थान के सूखा प्रभावित क्षेत्र

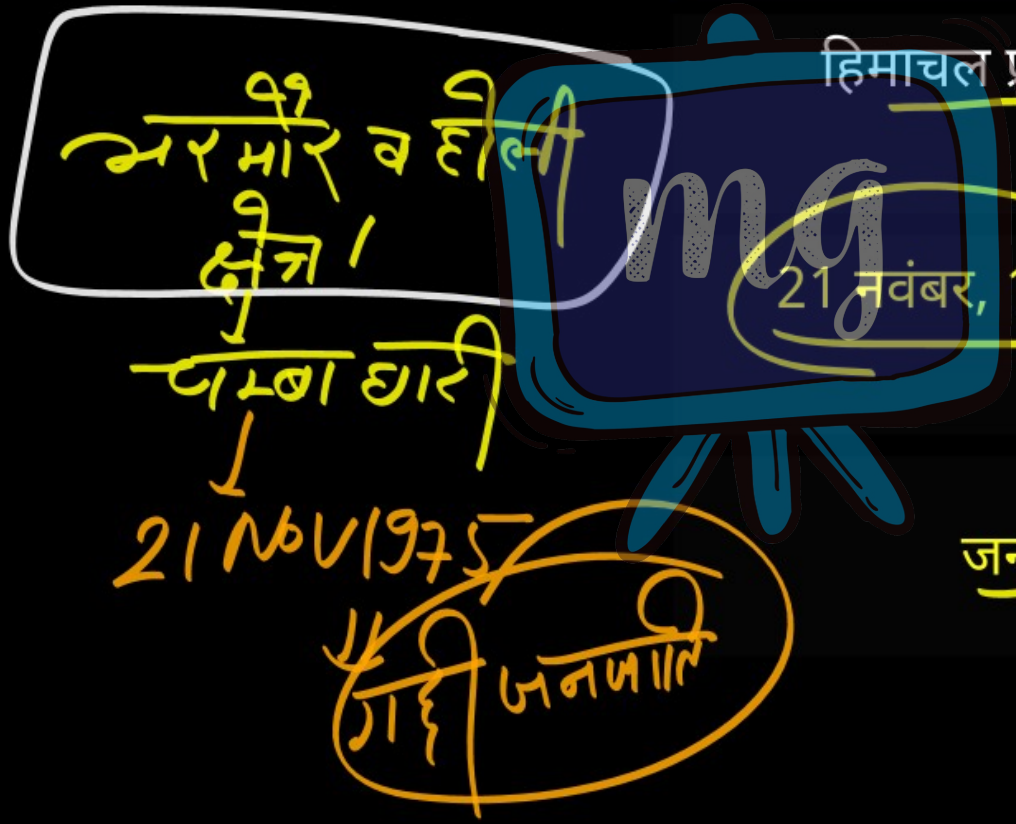
कारण :

इन क्षेत्रों में सिंचाई के प्रसार के कारण सूखे का प्रभाव कम हो जाता है।

केस अध्ययन : भरमौर क्षेत्र



केस अध्ययन : भरमौर क्षेत्र



- हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले की भरमौर एवं होली तहसीलें
- 21 नवंबर, 1975 से अधिसूचित जनजातीय क्षेत्र घोषित
- जनजाति : गद्दी जनजाति

गद्दी समुदाय की विशेषताएँ

- ऋतु-प्रवास
- गद्दीयाली भाषा का प्रयोग

ग्रीष्म → पहाड़ी
शीत → मैदानी




भरमौर जनजातीय क्षेत्र
कुगती क्षेत्र
खानी क्षेत्र
होली क्षेत्र
तुंडाह क्षेत्र
तुंडाह नदी
तुंडाह नदी
रावी नदी
रावी नदी
76°22'
76°28'
76°34'
76°40'
76°46'
76°53' पू॰
32°41' उ॰
32°33'
28°26'
32°18'
32°11'
जिला सीमा
तहसील सीमा
नदी और भूआकृतिक प्रदेश सीमा
ग्राम सीमा
कि॰मी॰ 10 0 10 किमी॰
चंबा में भरमौर क्षेत्र
जम्मू और कश्मीर
चं बा
भरमौर क्षेत्र

भरमौर जनजातीय क्षेत्र : भौगोलिक स्थिति




भरमौर जनजातीय क्षेत्र
कुगती क्षेत्र
खानी क्षेत्र
होली क्षेत्र
तुंडाह क्षेत्र
तुंडाह नदी
तुंडाह नदी
रावी नदी
रावी नदी
76°22'
76°28'
76°34'
76°40'
76°46'
76°53' पू॰
32°41' उ॰
32°33'
28°26'
32°18'
32°11'
जिला सीमा
तहसील सीमा
नदी और भूआकृतिक प्रदेश सीमा
ग्राम सीमा
कि॰मी॰ 10 0 10 किमी॰
चंबा में भरमौर क्षेत्र
जम्मू और कश्मीर
चं बा
भरमौर क्षेत्र

भरमौर जनजातीय क्षेत्र : भौगोलिक स्थिति

अक्षांश : 32°11' उत्तर से 32°41' उत्तर

देशांतर : 76°22' पूर्व से 76°53' पूर्व

क्षेत्रफल : 1,818 वर्ग किलोमीटर

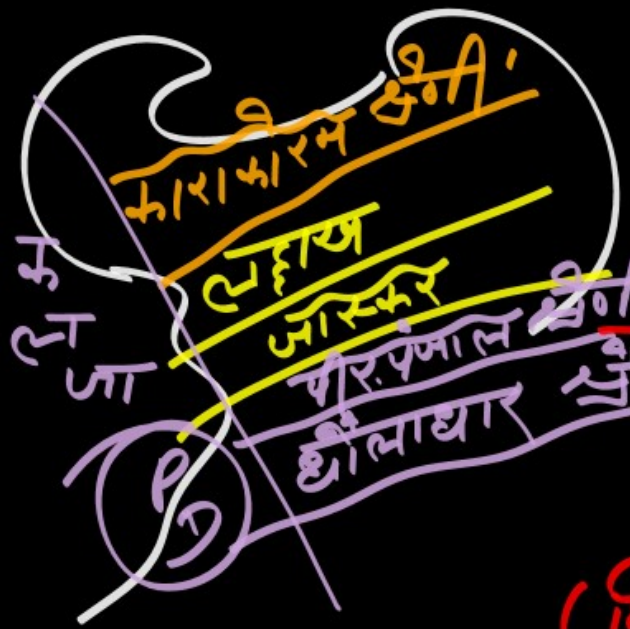
औसत ऊँचाई : 1500 से 3700 मीटर

भरमौर जनजातीय क्षेत्र : प्राकृतिक विशेषताएँ



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

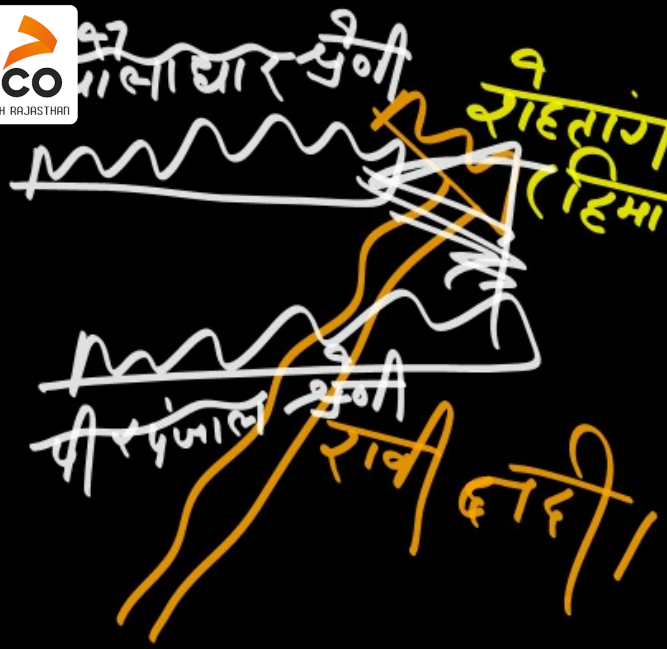


भरमौर जनजातीय क्षेत्र : प्राकृतिक विशेषताएँ

- उत्तर : पीर पंजाल पर्वत श्रेणी
- दक्षिण : धौलाधार पर्वत श्रेणी
- पूर्व : धौलाधार श्रेणी का विस्तार रोहतांग दर्रे के पास पीर पंजाल से मिलन

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





रावी

1. रावी
2. बुढ़ील
3. टुंडेन

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

शीत ऋतु → T- → हिमपात

ग्रीष्म ऋतु → तापमान +

ऋतु प्रवास

जलवायु

- शरद ऋतु में अत्यधिक ठंड एवं हिमपात
- जनवरी का औसत तापमान : 4°C
- जुलाई का औसत तापमान : 26°C



भरमौर क्षेत्र की प्रमुख विशेषताएँ



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भरमौर क्षेत्र की प्रमुख विशेषताएँ

- कठोर जलवायु
- आधारभूत संसाधनों की कमी
- भंगुर (Fragile) पर्यावरण
- क्षेत्र की अर्थव्यवस्था एवं समाज प्रभावित

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में प्रथम जनगणना
↓
1872 (लार्ड मेयो)

→ नियमानुसार जनगणना
↓↓
1881 (लार्ड रिपन)

→ कुल जनगणना → 15 वीं
→ नियमानुसार - XV 2011

जनसंख्या

☞ 2011 की जनगणना के अनुसार—

- जनसंख्या : 39,113
- जनसंख्या घनत्व 21 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर



आर्थिक स्थिति

- हिमाचल प्रदेश के आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सबसे पिछड़े क्षेत्रों में से एक
- गद्दी जनजाति द्वारा ऐतिहासिक रूप से भौगोलिक एवं आर्थिक अलगाव का अनुभव
- मुख्य आर्थिक आधार–

कृषि	भेड़ एवं बकरी पालन

विकास की शुरुआत



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विकास की शुरुआत

1970 के दशक में विकास प्रक्रिया प्रारंभ

गद्दी समुदाय अनुसूचित जनजाति में शामिल

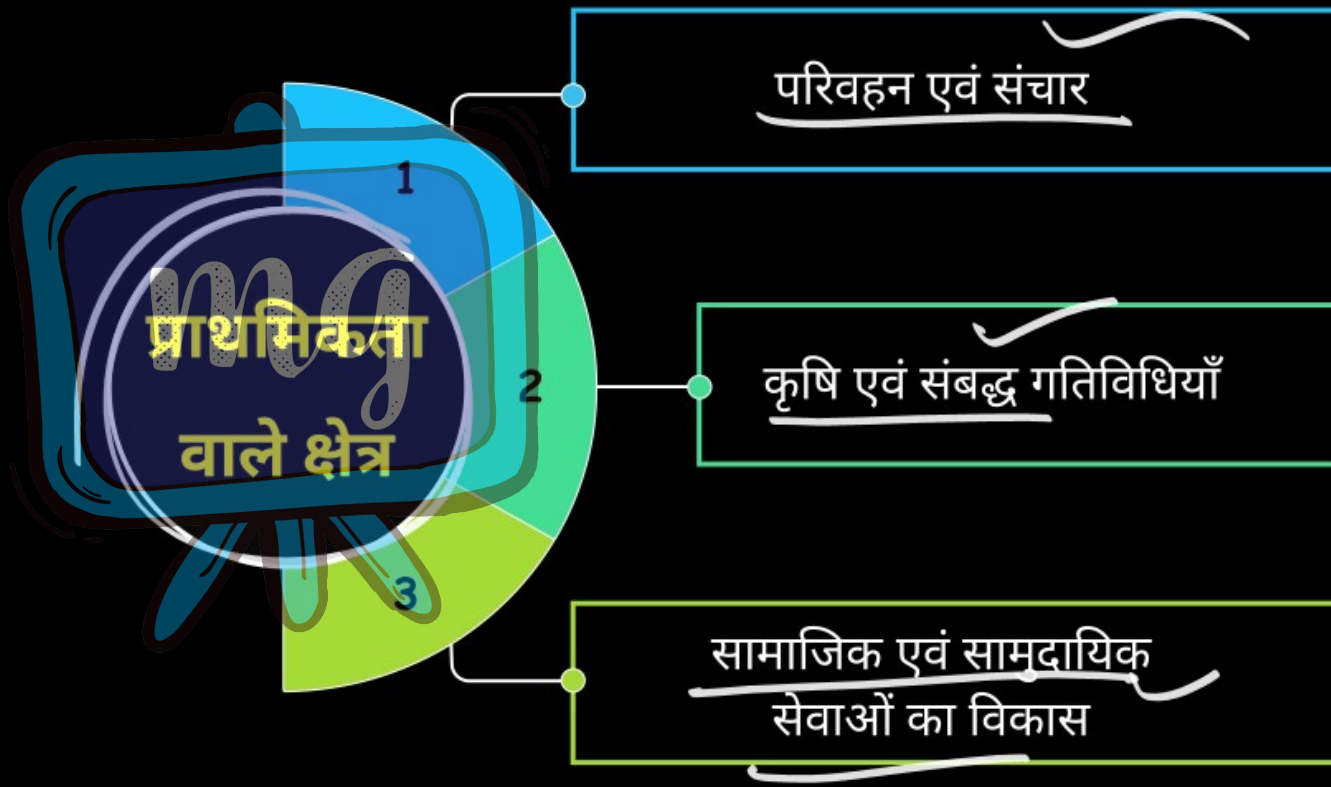
1974 में पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत जनजातीय उप-योजना प्रारंभ

भरमौर को हिमाचल प्रदेश में पाँच समन्वित जनजातीय विकास परियोजनाओं (ITDP) का दर्जा

क्षेत्र विकास योजना के उद्देश्य

- गद्दी समुदाय के जीवन स्तर में सुधार करना।
- भरमौर एवं हिमाचल प्रदेश के अन्य भागों के बीच विकास स्तर का अंतर कम करना।




प्राथमिकता वाले क्षेत्र
1
2
3
परिवहन एवं संचार
कृषि एवं संबद्ध गतिविधियाँ
सामाजिक एवं सामुदायिक सेवाओं का विकास

अवसंरचना विकास

- विद्यालय
- जन स्वास्थ्य सुविधाएँ
- पेयजल
- सड़कें
- संचार
- विद्युत

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

- होली और खणी क्षेत्रों में रावी नदी के साथ बसे गाँव अवसंरचना विकास से सबसे अधिक लाभान्वित हुए हैं।
- तुंदाह और कुगती क्षेत्रों के दूरदराज के गाँव अभी भी इस विकास की परिधि से बाहर हैं।

सामाजिक लाभ



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सामाजिक लाभ

- साक्षरता दर में तीव्र वृद्धि
- लिंग अनुपात में सुधार
- बाल विवाह में कमी
- **स्त्री साक्षरता दर :**
  - 1971 : 1.88%
  - 2011 : 65%
- स्त्री-पुरुष साक्षरता अंतर में कमी

आर्थिक परिवर्तन

पारंपरिक अर्थव्यवस्था :

- जीवन निर्वाह कृषि
- पशुचारण



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

वर्तमान अर्थव्यवस्था :

- दालों एवं अन्य नकदी फसलों की खेती में वृद्धि
- खेती अभी भी पारंपरिक तकनीकों से
- पशुचारण का महत्व घटा
- केवल दसवाँ भाग पारिवारिक इकाइयाँ द्वारा ही ऋतु-प्रवास
- शरद ऋतु में कृषि एवं मजदूरी हेतु कांगड़ा एवं आसपास के क्षेत्रों में प्रवास

विकास



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

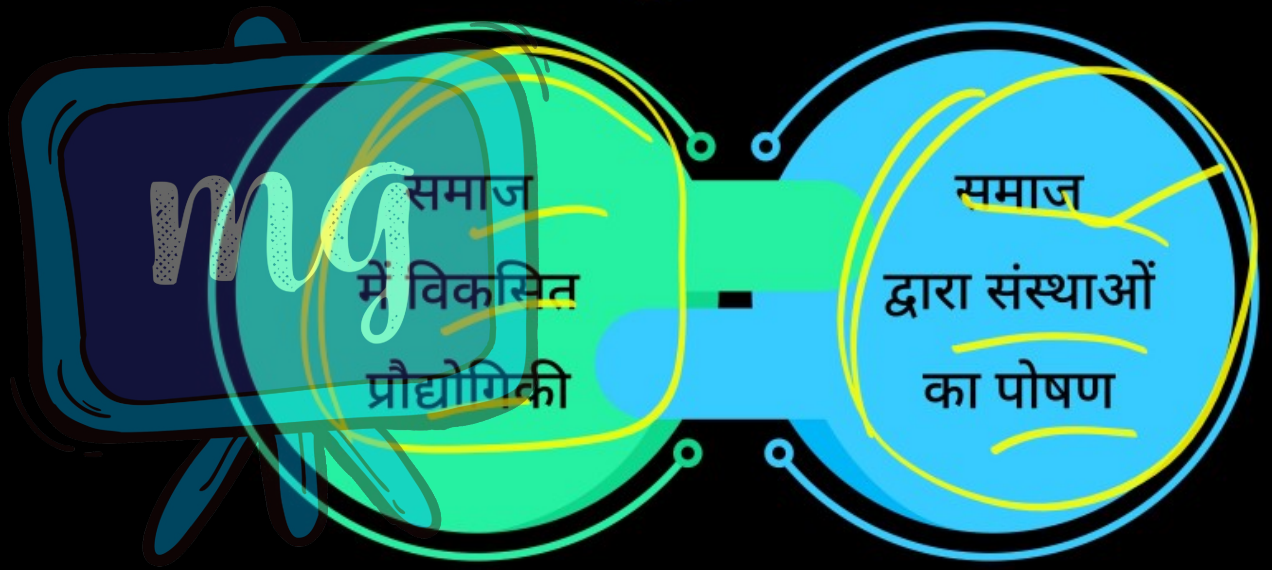
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विकास

विकास का अर्थ समाज की स्थिति एवं उसमें होने वाले परिवर्तन की प्रक्रिया से

समाज एवं जैव-भौतिक पर्यावरण की निरंतर अंतःक्रियाओं द्वारा समाज की स्थिति निर्धारित

मानव-पर्यावरण अंतःक्रिया की निर्भरता



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

- प्रौद्योगिकी एवं संस्थाओं ने मानव-पर्यावरण अंत:क्रिया को गति प्रदान की।
- विकास एक बहुआयामी संकल्पना है, जो अर्थव्यवस्था, समाज एवं पर्यावरण में सकारात्मक एवं अनुत्क्रमीय परिवर्तन का द्योतक है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विकास की बदलती अवधारणा

- विकास की संकल्पना गतिक है।
- इसका विकास 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विकास को आर्थिक वृद्धि का पर्याय माना गया।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नागरिकों के द्वारा उत्पादित अं. वस्तु व सेवाओं का अन्तिम मौद्रिक मूल्य।

Gross National Pro.

(GNP)

विदेशों





1. सकल राष्ट्रीय उत्पाद
2. प्रति व्यक्ति आय
3. प्रति व्यक्ति उपभोग

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विकास की नई अवधारणा

कुल राष्ट्रीय आय
कुल जनसंख्या
= प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

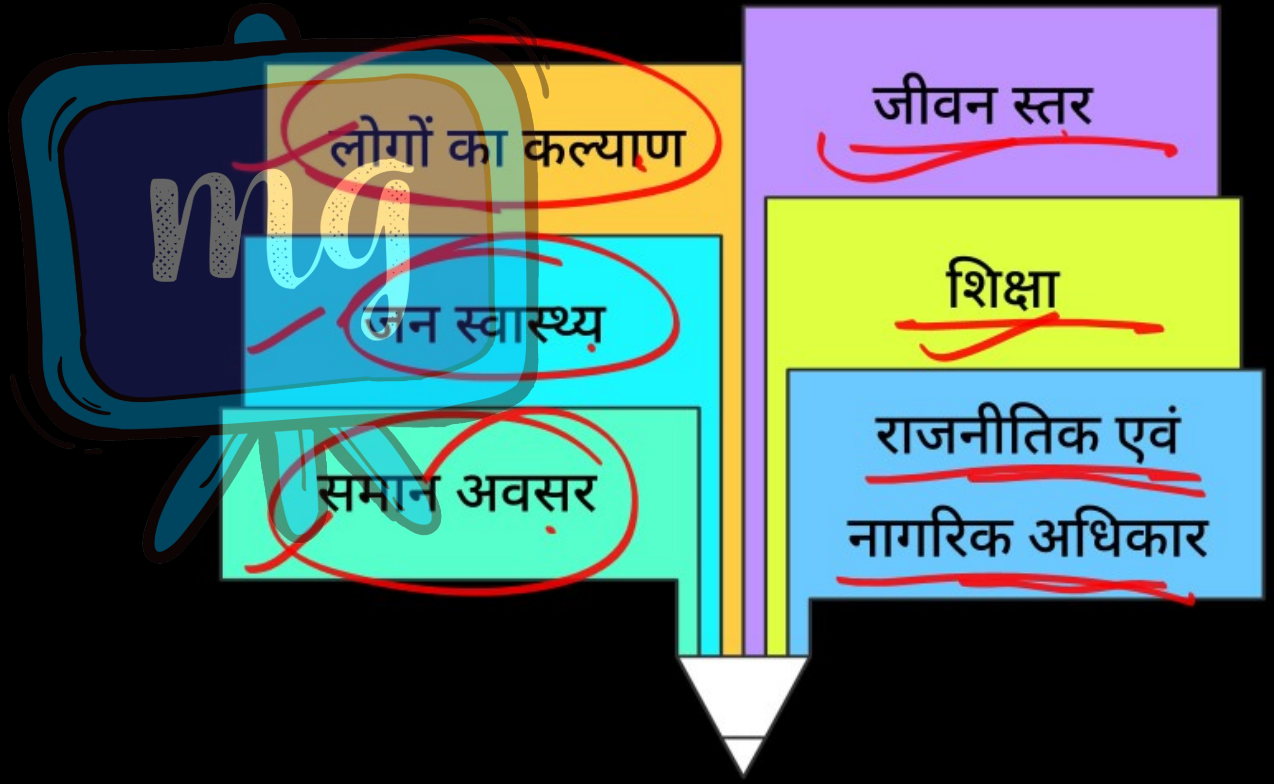
विकास की नई अवधारणा

- अधिक आर्थिक वृद्धि के बावजूद असमान वितरण के कारण गरीबी बढ़ी।
- 1970 के दशक में–

वृद्धि	विकास
संकीर्ण अवधारणा	विस्तृत अवधारणा
किसी एक क्षेत्र	सभी क्षेत्र

- पुनर्वितरण के साथ वृद्धि
- वृद्धि व समानता विकास की अवधारणा में शामिल

1970 के दशक में विकास की अवधारणा



विकास : एक बहु-आयामी संकल्पना

- 1980 के दशक तक विकास बहुआयामी संकल्पना बन गया।
- इसमें समाज के सभी लोगों के सामाजिक एवं भौतिक कल्याण को शामिल किया गया।



सतत् पोषणीय विकास की अवधारणा



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सतत् पोषणीय विकास

सतत् पोषणीय विकास की अवधारणा

- 1960 के दशक के अंत में पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ने से सतत पोषणीय विकास की अवधारणा विकसित
- कारण : औद्योगिक विकास के पर्यावरण पर अनपेक्षित प्रभावों के प्रति बढ़ती चिंता

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रमुख प्रकाशन

- 1968 : एहरलिच की पुस्तक 'द पापुलेशन बम'
- 1972 : मीडोस एवं अन्य की पुस्तक 'द लिमिट टू ग्रोथ'
- परिणामस्वरूप : सतत पोषणीय विकास की अवधारणा विकसित

विश्व पर्यावरण और विकास आयोग (WECD)

- पर्यावरणीय चिंताओं को ध्यान में रखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा स्थापना
- आयोग की अध्यक्ष : गरो हरलेम ब्रंटलैंड (नॉर्वे की प्रधानमंत्री)



विश्व पर्यावरण और विकास आयोग।

193 U.N.O

1945 न्यूयॉर्क (U.S.A)

ब्रंटलैंड रिपोर्ट

- 1987 में आयोग द्वारा 'अवर कॉमन फ्यूचर' (ब्रंटलैंड रिपोर्ट) प्रस्तुत
- **सतत पोषणीय विकास का अर्थ :**

एक ऐसा विकास जिसमें भविष्य में आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकता पूर्ति को प्रभावित किए बिना वर्तमान पीढी द्वारा अपनी आवश्यकता की पूर्ति करना

इंदिरा गांधी नहर



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



इंदिरा गांधी नहर

पूर्व नाम
राजस्थान नहर

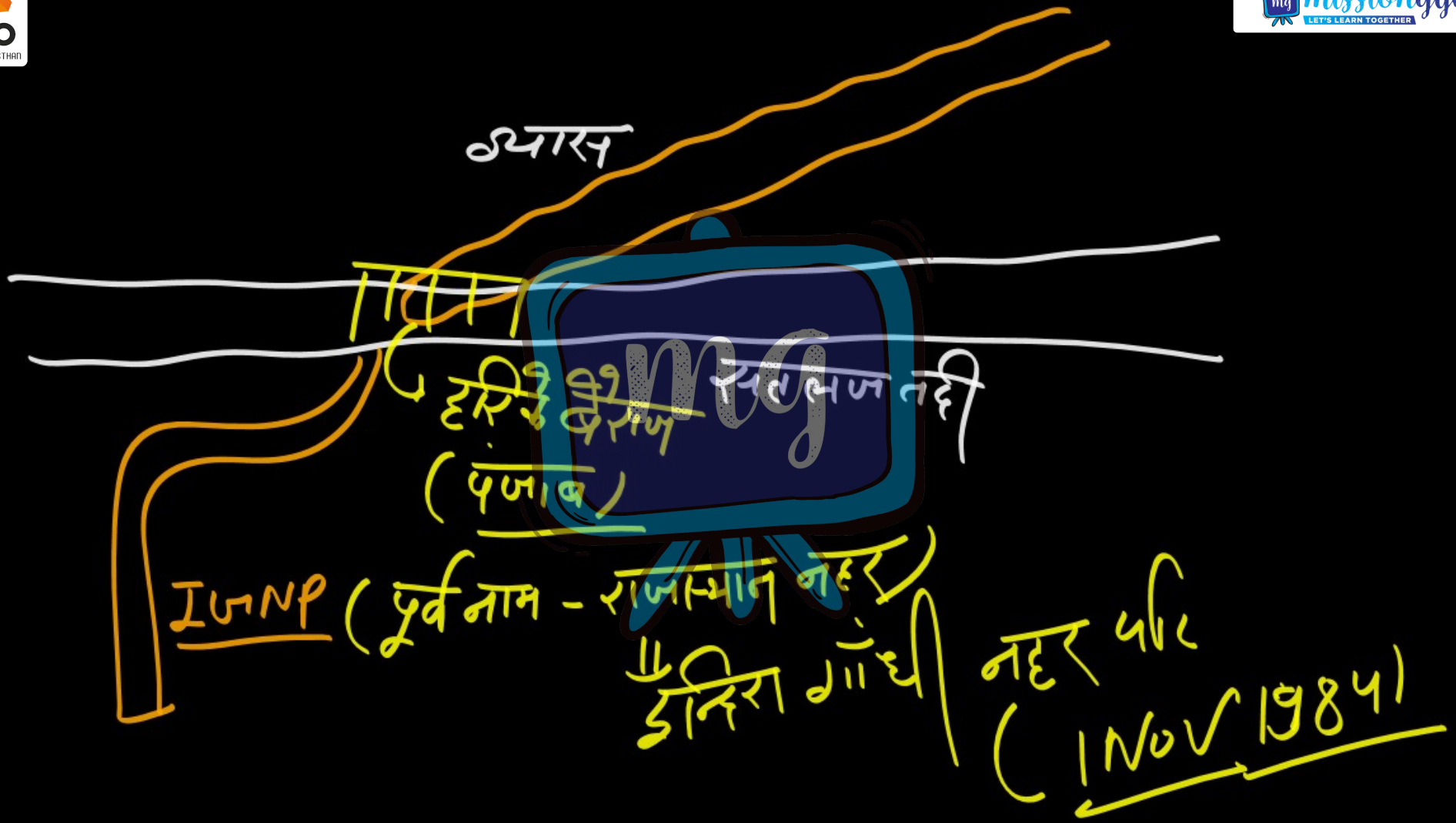
विशेषता
भारत के सबसे बड़े नहर तंत्रों में से एक

संकल्पना प्रस्तुत
1948 में कँवर सेन द्वारा

शुभारंभ
31 मार्च, 1958

कँवर सेन (1948) ➡ बीकानेर ➡ लेख → बीकानेर राज्य के लिए पानी आवश्यक

गृहमंत्री + गोविन्द वल्लभ पंत


व्यास
हरिके बैराज
(पंजाब)
सतलुज नदी
IGNP (पूर्व नाम - राजस्थान नहर)
इंदिरा गाँधी नहर परि.
(1 Nov 1984)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

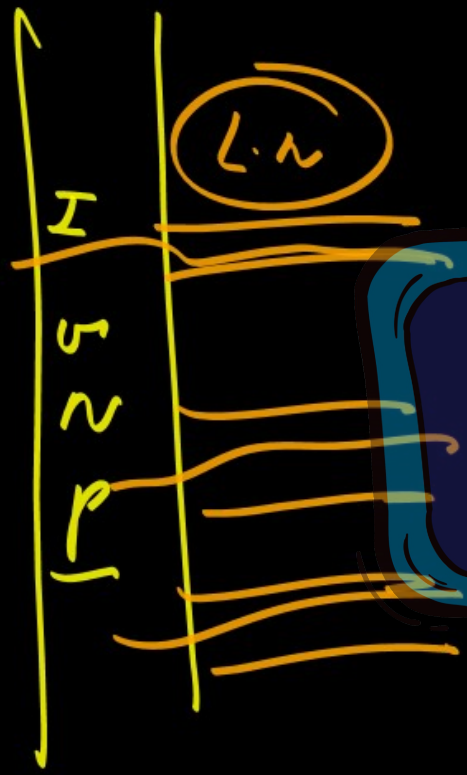


इंदिरा गांधी नहर

- उद्गम : पंजाब के हरिके बाँध से
- प्रवाह क्षेत्र : राजस्थान के थार मरुस्थल में पाकिस्तान सीमा के समानांतर लगभग 40 किमी की औसत दूरी पर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



इंदिरा गांधी नहर

- कुल नियोजित लंबाई : 9060 किमी
- कुल कृषि योग्य कमान क्षेत्र : 19.63 लाख हेक्टेयर
- सिंचाई व्यवस्था :

19.63 लाख ह.

70% क्षेत्र	30% क्षेत्र
प्रवाह नहर तंत्र	लिफ्ट नहर तंत्र

इंदिरा गांधी नहर : चरण - I

- जिले : गंगानगर, हनुमानगढ एवं बीकानेर (उत्तरी भाग)
- कृषि योग्य कमान क्षेत्र : 5.53 लाख हेक्टेयर
- भूतल : थोड़ा ऊबड़-खाबड़
- सिंचाई प्रारंभ : 1960 के दशक के प्रारंभ में

इंदिरा गांधी नहर : चरण - II

- जिले : बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, नागौर एवं चुरू
- कृषि योग्य कमान क्षेत्र : 14.10 लाख हेक्टेयर
- विशेषताएँ :
  - स्थानांतरी बालू टिब्बे
  - ग्रीष्म ऋतु में तापमान 50°C तक
- सिंचाई प्रारंभ : 1980 के दशक के मध्य में

लिफ्ट एवं प्रवाह नहर

- **लिफ्ट नहर :**
  - जल को मशीनों द्वारा ढाल के विपरीत ऊपर उठाया जाता है।
  - मुख्य नहर के बाएँ किनारे से निकलती हैं।
- **प्रवाह नहरें**

  मुख्य नहर के दाएँ किनारे से निकलती हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



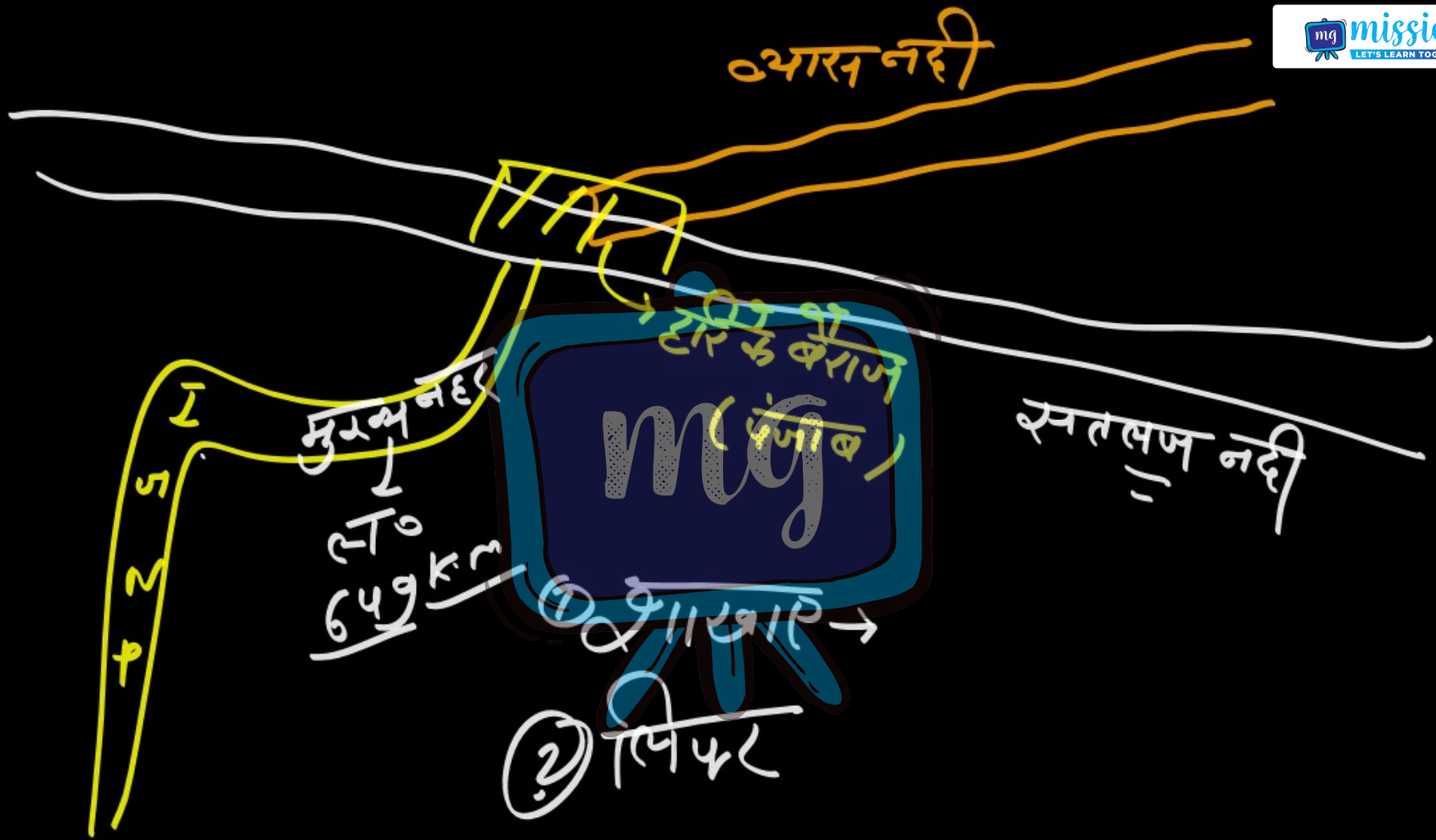
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नहर सिंचाई के सकारात्मक प्रभाव

- पारिस्थितिकी, अर्थव्यवस्था व समाज में परिवर्तन
- भूमि में नमी की उपलब्धता
- वनीकरण एवं चरागाह विकास
- भूमि हरी-भरी हुई
- वायु अपरदन एवं बालू निक्षेप में कमी
- बोए गए क्षेत्र एवं फसल सघनता में वृद्धि
- कृषि एवं पशुधन उत्पादकता में वृद्धि

बालुका स्तूप
||
मरुस्थलीय करण
कमी।
→ मरुस्थल का मार्च।


व्यास नदी
हरिके बैराज
(पंजाब)
सतलुज नदी
इन्दिरा गांधी नहर
I
N
D
I
A
P
A
K
I
S
T
A
N
649 km
① पाकिस्तान →
② तिब्बत

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

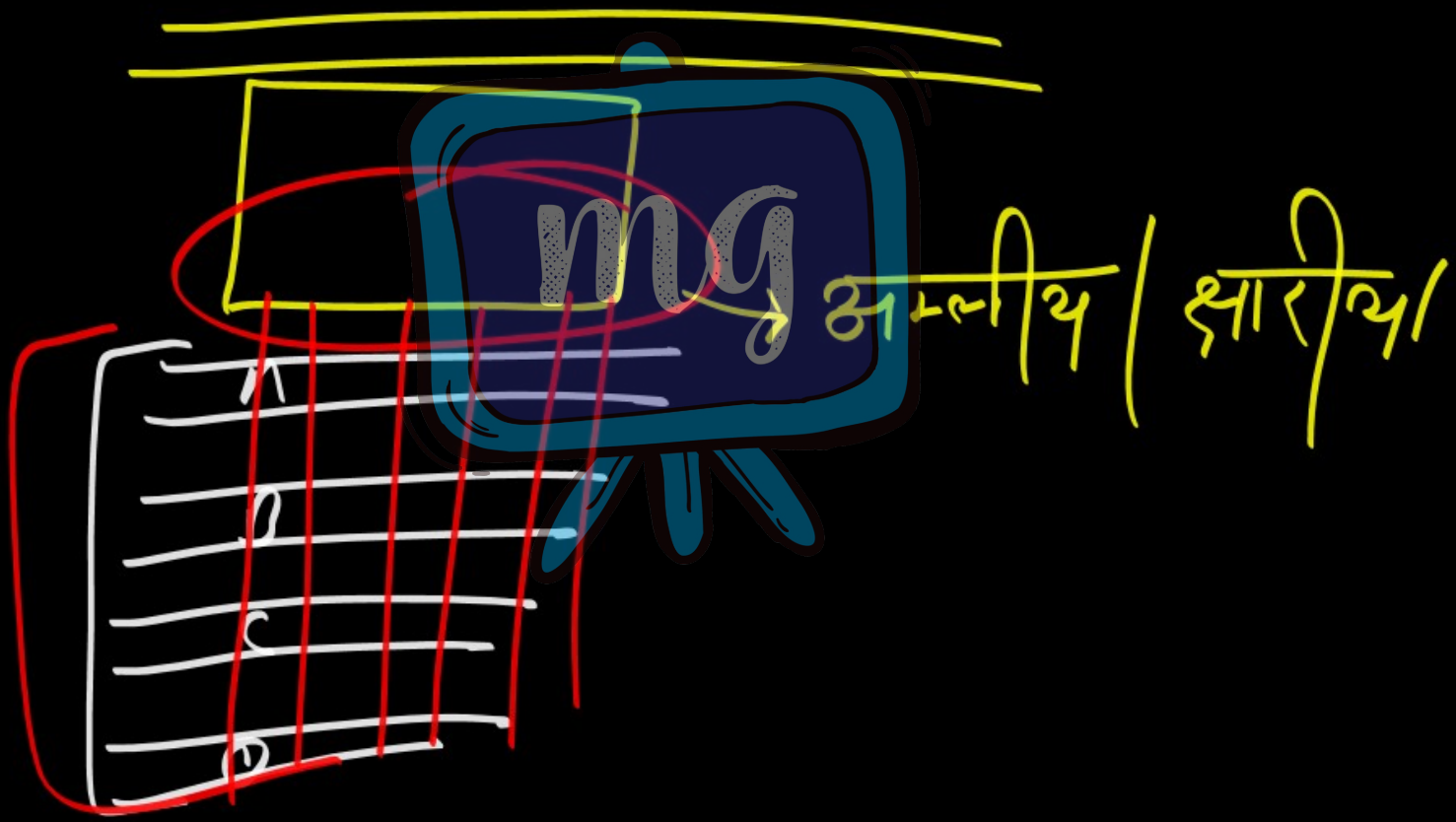
नहर सिंचाई के नकारात्मक प्रभाव

जलभराव

मृदा लवणता

कृषि की सतत पोषणता पर प्रश्न




अम्लीय / क्षारीय

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

स्वैम समस्या → यह समस्या नदरी सिंचित क्षेत्रों में पायी जाती है।

→ वह क्षेत्र दलदली क्षेत्र परिवर्तित हो जाता है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सतत पोषणीय विकास को बढ़ावा देने वाले उपाय

- मुख्य उद्देश्य : कमान क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास प्राप्त करना।
- मुख्य आधार : पारिस्थितिकीय सतत पोषणता।
- प्रस्तावित उपाय : 7
- पारिस्थितिकीय संतुलन पर आधारित उपाय : 5

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1. जल प्रबंधन नीति

- मुख्य उपाय : जल प्रबंधन नीति का कठोरता से कार्यान्वयन।
- चरण-I : फसल रक्षण सिंचाई।
- चरण-II : फसल उत्पादन एवं चरागाह विकास हेतु विस्तारित सिंचाई

2. शस्य प्रतिरूप

- जल-सघन फसलें : नहीं बोनी चाहिए।
- बागाती कृषि : खट्टे फलों की खेती को बढ़ावा।



3. कमान क्षेत्र विकास कार्यक्रम

☛ मुख्य कार्य :

- ✧ नालों को पक्का करना।
- ✧ भूमि विकास एवं समतलीकरण।
- ✧ वारबंदी (ओसरा) पद्धति द्वारा जल का समान वितरण।

☛ उद्देश्य :

बहते जल की क्षति कम करना।

4. भूमि सुधार

मुख्य कार्य :

जलाक्रांत एवं लवणीय भूमि का पुनरुद्धार।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

5. पारितंत्र विकास

☛ मुख्य कार्य :

- ✧ वनीकरण।
- ✧ वृक्षों की रक्षण मेखला (Shelterbelt) का निर्माण।
- ✧ चरागाह विकास।

☛ विशेष आवश्यकता :

- ✧ चरण-II के भंगुर पर्यावरण में।

6. सामाजिक सतत पोषणता

निर्धन आर्थिक स्थिति वाले भूआवंटियों को कृषि के लिए पर्याप्त मात्रा में वित्तीय और संस्थागत सहायता उपलब्ध करवाना।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

7. आर्थिक सतत पोषणता

- मुख्य उपाय :
  - केवल कृषि एवं पशुपालन पर निर्भरता समाप्त करना।
  - अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों का विकास।
  - आर्थिक विविधीकरण को बढ़ावा देना।
  - मूल आबादी गाँवों, कृषि-सेवा केंद्रों (सुविधा गाँवों) एवं विपणन केंद्रों (मंडी कस्बों) के बीच प्रकार्यात्मक संबंध स्थापित करना।